CLASS : 12th (Sr. Secondary) **2062/2012**

Series : SS-M/2017

Total No. of Printed Pages : **64**

SET : A, B, C & D

MARKING INSTRUCTIONS AND MODEL ANSWERS

HISTORY

ACADEMIC/OPEN

(Only for Fresh Candidates)

उप-परीक्षक मूल्यांकन निर्देशों का ध्यानपूर्वक अवलोकन करके उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें। यदि परीक्षार्थी ने प्रश्न पूर्ण व सही हल किया है तो उसके पूर्ण अंक दें।

General Instructions :

(i) *Examiners are advised to go through the general as well as specific instructions before taking up evaluation of the answer-books.*

(ii) *Instructions given in the marking scheme are to be followed strictly so that there may be uniformity in evaluation.*

(iii) *Mistakes in the answers are to be underlined or encircled.*

(iv) *Examiners need not hesitate in awarding full marks to the examinee if the answer/s is/are absolutely correct.*

(v) Examiners are requested to ensure that every answer is seriously and honestly gone through before it is awarded mark/s. It will ensure the authenticity as their evaluation and enhance the reputation of the Institution.

(vi) A question having parts is to be evaluated and awarded partwise.

(vii) If an examinee writes an acceptable answer which is not given in the marking scheme, he or she may be awarded marks only after consultation with the head-examiner.

(viii) If an examinee attempts an extra question, that answer deserving higher award should be retained and the other scored out.

(ix) Word limit wherever prescribed, if violated upto 10%. On both sides, may be ignored. If the violation exceeds 10%, 1 mark may be deducted.

(x) Head-examiners will approve the standard of marking of the examiners under them only after ensuring the non-violation of the instructions given in the marking scheme.

(xi) Head-examiners and examiners are once again requested and advised to ensure the authenticity of their evaluation by going through the answers seriously, sincerely and honestly. The advice, if not headed to, will bring a bad name to them and the Institution.

महत्त्वपूर्ण निर्देश :

(i) अंक-योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है। अंक-योजना में दिए गए उत्तर-बिन्दु अंतिम नही हैं। ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं। यदि परीक्षार्थी ने इनसे भिन्न, किन्तु उपयुक्त उत्तर दिए हैं, तो उसे उपयुक्त अंक दिए जाएँ।

(ii) शुद्ध, सार्थक एवं सटीक उत्तरों को यथायोग्य अधिमान दिए जाएँ।

(iii) परीक्षार्थी द्वारा अपेक्षा के अनुरूप सही उत्तर लिखने पर उसे पूर्णांक दिए जाएँ।

(iv) वर्तनीगत अशुद्धियों एवं विषयांतर की स्थिति में अधिक अंक देकर प्रोत्साहित न करें।

(v) भाषा-क्षमता एवं अभिव्यक्ति-कौशल पर ध्यान दिया जाए।

(vi) मुख्य-परीक्षकों/उप-परीक्षकों को उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करने के लिए केवल Marking Instructions/ Guidelines दी जा रही हैं, यदि मूल्यांकन निर्देश में किसी प्रकार की त्रुटि हो, प्रश्न का उत्तर स्पष्ट न हो, मूल्यांकन निर्देश में दिए गए उत्तर से अलग कोई और भी उत्तर सही हो तो परीक्षक, मुख्य-परीक्षक से विचार-विमर्श करके उस प्रश्न का मूल्यांकन अपने विवेक अनुसार करें।

SET – A

खण्ड – अ

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

1. चर्चा कीजिए कि पुरातत्त्व अतीत के पुनर्निर्माण का आरम्भिक चरण पुरातत्त्वविद् पुरावस्तुओं की प्राप्ति से करते हैं। इसके पश्चात् अवशेषों को प्राप्त करके उनका विश्लेषण करते हैं। इससे पुरातत्त्वविद् सभ्यता के जीवन का पुनर्निर्माण करते हैं। यह भौतिक अवशेष या कला या बर्तन, गहने, घर का सामान आदि है। यह भी उल्लेखनीय है कि केवल टूटी हुई या अनुपयोगी वस्तुएँ ही फेंकी जाती थीं। अन्य वस्तुएँ संभवतः पुनः चक्रित की जाती थीं या तो वे अतीत में खो गई थी या फिर संचयन के पश्चात् कभी दोबारा प्राप्त नहीं की गई थीं।

खोजों का वर्गीकरण : प्राप्त की गई वस्तुओं का फिर वर्गीकरण किया जाता है। वर्गीकरण का एक सामान्य सिद्धान्त प्रयुक्त पदार्थों जैसे पत्थर, मिट्टी, धातु, अस्थि, हाथी दांत आदि के संबंध में होता है दूसरा और अधिक जटिल, उनकी उपयोगिता के आधार पर होता है : पुरातत्त्वविदों को यह तय करना पड़ता है कि उदाहरणतः कोई पुरावस्तु एक औजार है या एक आभूषण है या फिर दोनों अथवा आनुष्ठानिक प्रयोग की कोई वस्तु।

किसी पुरावस्तु की उपयोगिता की समझ अक्सर आधुनिक समय में प्रयुक्त वस्तुओं से उनकी समानता पर आधारित होती है : मनके, चक्कियाँ, पत्थर के फलक तथा पात्र इसके स्पष्ट उदाहरण हैं। पुरातत्त्वविद् किसी पुरावस्तु की उपयोगिता को समझने का प्रयास उस संदर्भ के परीक्षण के माध्यम से भी करते हैं जिसमें वह मिली थी। क्या वे घर में मिली थी, नाले में, कब्र में या फिर भट्टी में ? 6

अथवा

The candidates are required to explain the following points in detail :

(i) मोहनजोदड़ो : एक नियोजित शहरी केन्द्र

(ii) निचला शहर

(iii) जल निकास प्रणाली

(iv) आवास अथवा मकानों का निर्माण गृह स्थापत्य (Domestic Architecture)

(v) सड़कें तथा गलियाँ

(vi) दुर्ग

(vii) मालगोदाम अथवा अन्नागार

(viii) विशाल स्नानागार

2. किस तरह शासकों ने नयनार और सूफ़ी संतों से अपने सम्बन्ध बनाने का प्रयास किया ?

नयनार और अलवार संत बेल्लाल कृषकों द्वारा सम्मानित होते थे। इसलिए आश्चर्य नहीं कि शासकों ने भी उनका समर्थन पाने का प्रयास किया। उदाहरणतया चोल सम्राटों ने दैवीय समर्थन पाने का दावा किया और अपनी सत्ता के प्रदर्शन के लिए सुंदर मन्दिरों का निर्माण किया जिसमें पत्थर और धातु से बनी हुई मूर्तियों को सजाया गया।

इन सम्राटों ने तमिल भाषा के शैव भजनों का गायन इन मंदिरों में प्रचलित किया। उन्होंने ऐसे भजनों का संकलन एक ग्रन्थ (तवरम्) के रूप में करने का भी जिम्मा उठाया। 945 ई० के एक अभिलेख से पता चलता है कि चोल सम्राट परांतक प्रथम ने संत कवि अय्यार संबंदर और सुंदरार की धातु प्रतिमाएँ एक शिव मंदिर में स्थापित करवाई। इन मूर्तियों को उत्सव में एक जुलूस में निकाला जाता था।

सूफ़ी संतों की धर्मनिष्ठा, विद्वता और लोगों द्वारा उनकी चमत्कारी शक्ति में विश्वास उनकी लोकप्रियता का कारण या इन वजहों से शासक भी उनका समर्थन हासिल करना चाहते थे। जब तुर्कों ने दिल्ली सल्तनत की स्थापना की तो उलमा द्वारा शरिया लागू किए जाने की माँग को ठुकरा दिया गया। ऐसे समय में सुल्तानों ने सूफ़ी संतों का सहारा लिया जो अपनी अध्यात्मिक सत्ता को अल्लाह से उद्‌भूत मानते थे और उलमा द्वारा शरिया की व्याख्या पर निर्भर नहीं थे।

यह भी माना जाता था कि औलिया मध्यस्थ के रूप में ईश्वर से लोगों की ऐहिक और अध्यात्मिक दशा में सुधार लाने का कार्य करते हैं। शायद इसलिए शासक अपनी कब्र सूफ़ी दरगाहों और खानकाहों के नजदीक बनाना चाहते थे। 6

अथवा

सूफ़ीमत के मुख्य धार्मिक विश्वास : इस्लाम की आरम्भिक शताब्दियों में कुछ अध्यात्मिक लोगों का झुकाव रहस्यवाद तथा वैराग्य की ओर बढ़ने लगा। इन लोगों को सूफ़ी मत बताया है सूफ़ी मत के धार्मिक विश्वासों तथा आचारों का वर्णन इस प्रकार है :

(i) सूफ़ियों ने रूढ़िवादी परिभाषाओं तथा धर्माचार्यों द्वारा की गई कुरान और सुन्ना (ईश्वर के व्यवहार) की बौद्धिक व्यवहार की आलोचना की। उन्होंने कुरान की व्याख्या अपने निजी अनुभवों के आधार पर की।

(ii) उन्होंने मुक्ति पाने के लिए ईश्वर की भक्ति और उनके आदेशों के पालन पर बल दिया।

(iii) उन्होंने पैगम्बर मोहम्मद को इंसान-ए-काबिल बताते हुए उनका अनुसरण करने की शिक्षा दी।

(iv) वे किसी औलिया का पीर की देखरेख में जिक्र (नाम का जाप) चिंतन, सभा (गाना), रकस (नृत्य), नीति चर्चा, सांस पर नियन्त्रण आदि क्रियाओं द्वारा मन को प्रशिक्षित करने के पक्ष में थे।

(v) वे सदाचारियों और मानव के प्रति दयालुता का पक्ष में थे।

(vi) वे सूफ़ी संतों के दरगाहों पर जियारत (तीर्थयात्रा) करते थे। नाच और संगीत भी जियारत का भाग था। विशेषकर कव्वालों द्वारा प्रस्तुत रहस्यवादी गुणगान, ताकि आलोकिक आनंद की भावना को उभारा जा सके। सूफ़ी संत जिक्र या फिर सभा अर्थात् अध्यात्मिक संगीत की महफिल द्वारा ईश्वर की उपासना में विश्वास रखते थे।

(vii) सूफ़ी संतों के अनुसार ईश्वर एक है, वह सर्वशक्तिमान है, उसकी सच्चे मन से भक्ति करनी चाहिए, अपना सब कुछ ईश्वर की इच्छा पर छोड़ देना चाहिए, गुरु गति का मार्ग दिखाता है मनुष्य को संसारिक वस्तुओं का मोह छोड़ना चाहिए जरूरतमंदों की सेवा करनी चाहिए।

3. अवध में विद्रोह इतना व्यापक क्यों था ?

1857 ई० का विद्रोह का व्यापक रूप अवध में देखने को मिलता है। यहाँ के किसान व दस्तकार से लेकर ताल्लुकदार और नवाबी

परिवार के सदस्यों सहित सभी वर्गों ने वीरतापूर्वक संघर्ष किया। हर एक गाँव से लोग विद्रोह में शामिल हुए। ताल्लुकदारों ने उन सभी गाँवों पर अपना पुनः अधिकार कर लिया जो अवध विलय से पहले उनके पास थे किसानों ने भी उनका साथ दिया। इस व्यापक विद्रोह के निम्नलिखित कारण थे :

(i) अवध का विलय

(ii) ताल्लुकदारों की जागीरें छीनना

(iii) दोषपूर्ण भू-राजस्व व्यवस्था

(iv) किसानों से अधिक राजस्व की माँग

(v) सामाजिक व्यवस्था को भंग करना

(vi) अवध के लोगों की नवाब के प्रति सम्मान एवं निष्ठा 6

अथवा

क्रांति में धार्मिक विश्वासों की भूमिका :

(i) ईसाई पादरी भारतीयों को लालच देकर उन्हें ईसाई बनाते थे।

(ii) अंग्रेजों ने जो सामाजिक सुधार किये थे जैसे - सतीप्रथा, बाल विवाह पर रोक लगा दी।

(iii) अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार के कारण भारतवासियों में असंतोष फैल गया कि अंग्रेज उन पर अंग्रेजी सभ्यता थोपना चाहते हैं और ईसाई धर्म में लाना चाहते हैं।

(iv) 1856 ई० में एक ऐसा सैनिक कानून पास किया गया जिसके अनुसार सैनिकों को समुद्र पार भेजा जा सकता है, परन्तु हिन्दू सैनिक समुद्र पार जाना अपने धर्म के विरुद्ध मानते थे।

(v) 1857 ई० में सैनिकों को चर्बी वाले कारतूस दिए गए जिनको मुँह से काटना पड़ता, जिससे जन की धार्मिक भावनाएँ भड़क उठीं।

4. गोलमेज़ सम्मेलनों में वार्ता का कोई नतीजा क्यों नहीं निकल पाया जिससे आन्दोलन को समाप्त करने के लिए अंग्रेज सरकार ने लंदन में गोलमेज़ सम्मेलनों का आयोजन शुरू किया। पहला गोलमेज़ सम्मेलन नवम्बर, 1930 में आयोजित किया गया। जिसमें देश के प्रमुख नेता शामिल नहीं हुए। इसी कारण अंततः यह बैठक निरर्थक साबित हुई। जनवरी, 1931 ई० में गाँधी जी को जेल से रिहा किया गया। अगले ही महीने वायसराय के साथ उनकी कई लंबी बैठकें हुईं।

उन्हीं बैठकों के बाद ''गाँधी-इर्विन समझौते'' पर सहमति बनी जिसकी शर्तों में सविनय आन्दोलन को वापिस लेना तथा अगले गोलमेज़ सम्मेलन में भाग लेना स्वीकार करना शामिल था।

अतः दूसरा गोलमेज़ सम्मेलन 1931 ई० के आखिर में लंदन में आयोजित हुआ उसमें गाँधी जी कांग्रेस का नेतृत्व कर रहे थे। गाँधी जी का कहना था कि उनकी पार्टी पूरे भारत का प्रतिनिधित्व करती है इस दावे को तीन पार्टियों ने चुनौती दी। मुस्लिम लीग का कहना था कि वह मुस्लिम अल्पसंख्यकों के हित में काम करती है। दूसरे राजे-रजवाड़ों का दावा था कि कांग्रेस का उनके नियन्त्रण वाले भू-भाग पर कोई अधिकार नहीं है। तीसरी चुनौती तेज-तर्रार वकील और विचारक बी० आर० अंबेडकर की तरफ से थी जिनका कहना था कि गाँधी जी और कांग्रेस पार्टी निचली जातियों का प्रतिनिधित्व नहीं करते लंदन में हुआ यह सम्मेलन किसी नतीजे पर नहीं पहुँच सका इसलिए गाँधी जी को खाली हाथ लौटना पड़ा था। इसी प्रकार तीसरा सम्मेलन (1932) भी असफल रहा। 6

अथवा

भारत छोड़ो आन्दोलन :

(A) **कारण :**

(i) भारत पर जापान का खतरा बराबर बना हुआ था। इसलिए गाँधी जी ने कहा कि अंग्रेजों को चाहिए कि वे भारत को जापान के लिए यदि नहीं तो भारतीयों के लिए छोड़ दें।

(ii) कैबिनेट मिशन की असफलता से निराशा का वातावरण था इसलिए जवाहर लाल नेहरू के अनुसार, ''जनता की निकट निराशा को साहस और प्रतिरोध के भावना में बदलना आवश्यक था।

(iii) गांधी जी ने समझ लिया था कि स्वतन्त्रता के लिए विद्रोह आवश्यक है उनके विचार ''करो या मरो'' (Do or Die) में परिवर्तित हो गए थे।

(iv) सुभाष चन्द्र बोस के जोशीले भाषण।

(v) भारतीय कांग्रेस कमेटी का अधिवेशन बम्बई में हुआ जिसमें 8 अगस्त को ''भारत छोड़ो प्रस्ताव'' पास कर दिया गया।

(vi) द्वितीय विश्व युद्ध से अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो गई जिसके लिए जनता ने अंग्रेजी शासन को जिम्मेदार माना और उसका ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध आक्रोश बढ़ता गया।

(B) (i) आन्दोलन का आरम्भ

(ii) प्रथम चरण

(iii) दूसरा चरण

(iv) तृतीय चरण

(v) सरकारी दमन

(vi) महत्त्व

खण्ड – ब

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

5. (i) कभी-कभी अभिलेखों के कुछ-भाग नष्ट हो जाते हैं।

(ii) कई अभिलेखों में राजाओं के कार्यों को बढ़ा-चढ़ाकर व्यक्त किया जाता है।

(iii) ये अभिलेख/कई बार जन-सामान्य के विचारों और कार्य-कलापों पर प्रकाश नहीं डालते।

(iv) सभी अभिलेख राजनीतिक और आर्थिक इतिहास की जानकारी प्रदान नहीं कर पाते। 4

6. इब्नबतूता द्वारा वर्णित शहरों की मुख्य विशेषताएँ : इब्नबतूता ने अपने वृतांत में सिन्ध, मुल्तान, लाहौर, दिल्ली, अजमेर, उज्जैन आदि शहरों का वर्णन किया है। वह लिखता है भारतीय शहर घनी आबादी वाले तथा समृद्ध थे यहाँ सड़कें तंग मोड़ माड़ वाली, रंगीन बाजार तथा बड़े-बड़े भवन थे। शहर केवल व्यापार के केन्द्र ही नहीं थे बल्कि सामाजिक तथा धार्मिक गतिविधियों का भी केन्द्र थे। 4

7. विजयनगर में सड़कों की व्यवस्था : विजयनगर के शासकों ने किलेबन्दी व दुर्ग व्यवस्था में सड़कों को विशेषतौर पर तैयार करवाया था। ये सड़कें पक्की थी। जो पहाड़ी और मैदानी दोनों क्षेत्रों में थी। नगरीय क्षेत्र, धार्मिक व राजकीय क्षेत्र से सड़कों से जोड़ा गया था। मंदिरों के प्रवेशद्वारों के साथ सड़कों की चौड़ाई थोड़ी अधिक थी। सड़कों को पत्थरों द्वारा पक्का किया गया था। 4

8. मुगलकालीन पंचायत का एक बड़ा काम यह तसल्ली करना था कि गाँव में रहने वाले अलग-अलग समुदायों के लोग अपनी जाति की हदों के अंदर रहें। पूर्वी भारत में सभी शादियाँ मंडल की मौजूदगी में होती थीं।

पंचायतों को जुर्माना लगाने और समुदायों से निष्कासित करने जैसे ज्यादा गम्भीर दण्ड देने के अधिकार थे। समुदाय से बाहर निकालना एक कड़ा कदम था जो एक सीमित समय के लिए लागू किया जाता था। 4

9. ह्वाइट टाउन 2100 का अर्थ है वह स्थान अर्थात् वह किला जहाँ अधिकतर यूरोपीय लोग ही रहते थे। अंग्रेजों ने इन स्थानों की बकायदा किलेबंदी कर रखी थी। इसलिए गोरे लोगों के रहने, पढ़ने वाले शहर को ह्वाइट टाउन कहा गया था।

ब्लैक टाउन का अर्थ है वह स्थान जहाँ पर केवल काले रंग अर्थात् भारतीय लोग व अन्य जातियों के लोग निवास करते थे। इसमें तंग और टेढ़ी गलियाँ थी ये टाउन ह्वाइट टाउन से दूर होते थे। 4

खण्ड – स

(अतिलघु उत्तरीय प्रश्न)

10. हड़प्पा की खोज 1921 ई० में हुई इसकी खोज दयाराम साहनी ने की थी। 2

11. गुप्तकाल में भूमि अनुदानों की विशेषताएँ :

भूमि अनुदान पत्रों में राजाओं, राज्याधिकारियों, रानियों, शिल्पियों तथा व्यापारियों द्वारा दिए गए धर्मार्थ धन, पशु, भूमि आदि का उल्लेख मिलता है। इनकी विशेषताएँ इस प्रकार हैं। 2

12. महाभारत के लेखक के बारे में इतिहासकार एक मत नहीं हैं। लेकिन अधिकतर इतिहासकार महाभारत का रचनाकार महर्षि वेदव्यास को मानते हैं। जनश्रुतियों के अनुसार मुनि वेदव्यास ने यह ग्रन्थ श्रीगणेश जी से लिखवाया था। 2

13. स्तूप क्यों बनाए जाते थे - स्तूप का शाब्दिक अर्थ है ढेर अथवा टीला। ऐसे टीले जिनमें महात्मा बुद्ध के अवशेषों या उनके द्वारा प्रयोग हुए सामान को गाड़ दिया गया था, बौद्ध स्तूप कहलाए। ये बौद्धों के लिए पवित्र स्थल थे। 2

14. विदेशी यात्री भारत में धर्म प्रचार या तीर्थयात्रा के उद्देश्य से आए थे। कई बार ये यात्री विद्या अध्ययन के लिए भी जाते थे। 2

15. खालसा पंथ की स्थापना गुरु गोबिन्द सिंह ने आनन्दपुर साहिब में 13 अप्रैल, 1699 ई० में की थी। 2

16. आईने-अकबरी की कोई दो सीमाओं का वर्णन :

(i) आईने-अकबरी पूर्ण रूप से दरबार के संरक्षण में लिखी गई है अतः लेखक कहीं भी अकबर के विरूद्ध कोई शब्द नहीं लिख सकता था।

(ii) इसमें विभिन्न स्थानों पर जोड़ में गलतियाँ पाई गई हैं। 2

17. मुगलकाल में मुद्रण कला का विकास नहीं हुआ था इसलिए सभी ग्रन्थों की रचना पांडुलिपियाँ/हस्तलिखित ग्रन्थों के रूप में हुई। पांडुलिपियों की रचना का मुख्य केन्द्र शाही-किताबखाना कहलाता था। इसी स्थान पर लिखी गई पांडुलिपियों को संग्रह करके रखा जाता था। 2

18. रैयतवाड़ी भू-राजस्व की वह प्रणाली थी जिसके अन्तर्गत रैयत (किसानों) का सरकार से सीधा सम्बन्ध होता था। इस व्यवस्था में बिचौलिये समाप्त कर दिए गए। 2

19. मार्च, 1930 ई० में महात्मा गांधी ने 240 मील की पैदल यात्रा करके समुद्र तट पर दांडी नामक स्थान पर नमक बनाकर नमक कानून तोड़ा। इसके पश्चात् नमक घर-घर में बनने लगा और अंग्रेज सरकार की भारतीयों को नमक बनाने की अनुमति देनी पड़ी। 2

खण्ड – द

(बहुविकल्पीय प्रश्न)

20. (ब) मोहनजोदड़ो से 1

21. (स) महाभारत 1

22. (द) बौद्ध धर्म 1

23. (ब) मुहम्मद तुगलक 1

24. (अ) 3 1

25. (ब) 1855 ई० में 1

26. (अ) जमींदारों के साथ 1

27. (ब) शिमला 1

28. (अ) 12 मार्च, 1930 ई० 1

29. (स) 1906 ई० 1

30. (अ) लखनऊ 1

31. (द) 16 अगस्त, 1946 ई० 1

32. (ब) कैबिनेट मिशन योजना 1

33. (अ) लार्ड माउंटबेटेन 1

34. (द) 389 1

35. (ब) रामानंद 1

SET – B

खण्ड – अ

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

1. **जल निकासी प्रणाली :** जल निकासी प्रणाली हड़प्पा शहर की सबसे अनूठी विशेषताओं में से एक ध्यानपूर्वक नियोजित जल निकास प्रणाली थी। ऐसा लगता है कि नालियों और गलियों की संरचना पहले की गई थी और बाद में इनके साथ घरों का निर्माण किया गया था। यदि आप निचले शहर के नक्शे को देखें तो आप यह जान जायेंगे कि सड़कों तथा गलियों को लगभग एक ही ग्रिड पद्धति में बनाया गया था और ये एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं। प्रत्येक घर के गन्दे पानी की निकासी एक पाइप से होती थी जो गली की नाली से जुड़ा होता था। उदाहरण के लिए लोथल में मकानों के बनाने के लिए जहाँ कच्ची ईंटों का इस्तेमाल हुआ है वहीं नालियाँ पक्की ईंटों से बनाई गई थीं। नालियों के विषय में मैके नामक पुरातत्त्वविद् (Early Indus Civilization) ने लिखा है ''निश्चित रूप से यह अब तक खोजी गई सर्वथा संपूर्ण प्राचीन प्रणाली है।''

निःसंदेह जल निकास प्रणाली हड़प्पा सभ्यता की नगर योजना की ओर संकेत करती है। सड़कें सीधी थी और समकोण में मिलती थी।। वर्षा का पानी निकालने के लिए जल निकास की बढ़िया व्यवस्था थी और गंदी नालियों को साफ करने के लिए मलकुण्ड थे। आधुनिक समय तक अन्य किसी भी नगर में ऐसी सुविधाएँ-उपलब्ध नहीं थीं। बहुत से नगरों में तो आज भी नहीं है। 6

अथवा

हड़प्पाई समाज में पुरातत्त्वविद् सामाजिक-आर्थिक भिन्नताओं का पता लगाने के लिए निम्नलिखित भिन्नताओं को आधार बनाते हैं।

1. **शमशान घाट :** शमशान घाट में मुर्दों को दफन करते समय उनके साथ कई प्रकार की वस्तुएँ रखी जाती थीं। ये वस्तुएँ मूल्यवान व साधारण भी हो सकती थीं। हड़प्पा स्थलों में जिन गर्तों में शवों को दबाया जाता था वहाँ भी वस्तुओं में भिन्नता पाई गई हैं। बहुमूल्य वस्तुएँ मृतक की मजबूत आर्थिक स्थिति को दर्शाती हैं जबकि साधाराण वस्तुएँ इसकी आर्थिक स्थिति को साधारण बताती हैं।

2. **भोग विलास की वस्तुएँ :** सामाजिक भिन्नता को पहचानने में एक अन्य विधि है - पुरानी वस्तुओं का अध्ययन अर्थात् पुरातत्त्वविद् मोटे तौर पर उपयोगी और विलास की वस्तुओं में वर्गीकृत करते हैं। पहले वर्ग में उपयोग की वस्तुएँ हैं। इन्हें पत्थर अथवा मिट्टी आदि साधारण पदार्थों से आसानी से बनाया जा सकता है। इनमें चक्कियाँ, मृदभांड, सूईआँ, झांवा, स्लेट आदि शामिल हैं ये वस्तुएँ प्रायः सभी बस्तियों में पाई गई हैं। पुरातत्त्वविद् उन वस्तुओं को कीमती मानते हैं जो कम मात्रा में पाई गईं और जो बहुत महंगी हैं जो जटिल तरीकों से बनाई गई हैं। इस दृष्टि से फयाँस के छोटे-पात्र कीमती माने जाते थे क्योंकि इन्हें बनाना कठिन था। जिन बस्तियों में ऐसी कीमती वस्तुएँ मिली हैं वहाँ के लोगों का सामाजिक स्तर आम लोगों से ऊँचा रहा होगा।

3. नगरों की आवास व्यवस्था

4. कार्यों का विभाजन

2. चर्चा कीजिए कि अलवार, नयनार और वीर शैवों ने किस प्रकार जाति प्रथा की आलोचना प्रस्तुत की :

अलवार और नयनार तमिलनाडु के भक्ति प्रचारक थे। अलवार विष्णु के, नयनार शिव के भक्त थे।

(i) कुछ इतिहासकार का मानना है कि अलवार और नयनार संतों ने जाति प्रथा तथा ब्राह्मणों के प्रभुत्व के विरूद्ध आवाज उठाई। कुछ सीमा तक यह बात की सत्यता प्रतीत होती है क्योंकि भक्ति संत विविध समुदायों से थे जैसे : ब्राह्मण, शिल्पकार, किसान आदि। अलवार और नयनार संतों की रचनाओं को वेदों के समान महत्त्वपूर्ण बताकर इस परम्परा को सम्मानित किया गया। उदाहरण के लिए अलवार संतों के एक मुख्य काव्य संकलन नलविराढिच्यप्रवधम् का उल्लेख तमिल वेद के रूप में किया जाता था। इस प्रकार इस ग्रन्थ का महत्त्व संस्कृत के चारों वेदों के समान बताया गया।

(ii) वीर शैव कर्नाटक से संबन्ध रखते थे। वे वासवन्ना के अनुयायी थे। उन्होंने जाति तथा कुछ समुदायों के दूषित होने की ब्राह्मनीय अवधारणा का विरोध किया। 6

अथवा

(अ) **कबीर का जीवन और शिक्षाएँ :**

कबीर का अरबी में अर्थ है महान्। उन्हें जन्म से हिन्दू कबीरदास बताया गया है। किन्तु उनका पालन गरीब मुस्लिम परिवार में हुआ जो जुलाहे थे और कुछ समय पहले ही इस्लाम धर्म के अनुयायी बने थे। वैष्णव परिवार की जीवनियों में कहा जाता है कि कबीर को भक्तिमार्ग दिखाने वाले गुरु रामानंद थे। कबीर की बानी तीन परिपाटियों में संकलित है - कबीर बीजक, कबीर ग्रंथावली तथा आदि ग्रंथ साहिब। 2

(ब) **कबीर के मुख्य उपदेशों का वर्णन :** कबीर सूफ़ी संतों में विशेष स्थान रखते हैं। उन्होंने लोगों को निम्न उपदेश दिए :

(i) उन्होंने बहुदेववाद तथा मूर्तिपूजा का विरोध किया।

(ii) कबीर ने जिक्र और इश्क के सूफ़ी सिद्धान्तों के प्रयोग द्वारा सिमरन नाम पर बल दिया।

(iii) कबीर के अनुसार परम परमात्मा एक है भले ही विभिन्न संप्रदायों के लोग उसे अलग-अलग नामों से पुकारते हैं।

(iv) उन्होंने परमात्मा को निराकार बताया है। 4

3. अंग्रेजों ने विद्रोह को कुचलने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए :

(i) उत्तर भारत को देबारा जीतने के लिए तथा विद्रोह को शांत करने के लिए कई कानून पारित किए।

(ii) मई-जून, 1857 ई० में पारित कानूनों द्वारा सारे उत्तर भारत में मार्शल लॉ लागू कर दिया गया।

(iii) फौजी अफसरों और यहाँ तक आम अंग्रेजों को भी ऐसे हिन्दुस्तानियों पर मुकदमा चलाने और उनको सजा देने का अधिकार दे दिया गया जिन पर विद्रोह में शामिल होने का शक् था।

(iv) सभी प्रकार के कानून और मुकदमें में सामान्य प्रक्रिया रद्द कर दी गई थी और स्पष्ट कर दिया गया था कि विद्रोह की केवल एक ही सजा हो सकती है - सजा-ए-मौत 6

अथवा

विद्रोहियों के बीच एकता स्थापित ....

(i) 1857 ई० में क्रान्तिकारियों ने अपनी घोषणाओं में जाति और धर्म के भेदभाव के बिना समाज के सभी लोगों को एक मंच पर इकट्ठा करने का आह्वान किया गया।

(ii) यद्यपि कुछ घोषणाएँ मुस्लिम शासकों द्वारा जारी की जाती थी परन्तु फिर भी उसमें हिन्दुओं की भावनाओं का ध्यान रखा जाता था।

(iii) इस विद्रोह को एक ऐसे युद्ध के रूप में प्रस्तुत किया गया जिसमें हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों को ही समान रूप से प्रभावित करते थे।

(iv) इश्तहारों में अंग्रेजों से पहले के हिन्दू-मुस्लिम अतीत की ओर संकेत किया जाता था और मुगल साम्राज्य के अधीन विभिन्न समुदायों के सहअस्तित्व का गौरवगान किया जाता था।

(v) बहादुरशाह के नाम से जारी घोषणा में मुहम्मद और महावीर, दोनों की दुहाई देते हुए जनता से हम इस लड़ाई में शामिल होने का आह्वान किया गया था। यद्यपि अंग्रेजों ने 1857 ई० में बरेली के हिन्दुओं को भड़काने के लिए, 50,000/- रु० खर्च किए परन्तु उनकी कोशिशें असफल रहीं।

4. गाँधी जी के सद्भावना के प्रयास :

(i) 15 अगस्त, 1947 को गाँधी जी राजधानी में नहीं थे। वे उस समय कलकत्ता में साम्प्रदायिक सद्भावना को बहाल करने में लगे हुए थे। वे पीड़ितों को सान्त्वना देते हुए अस्पतालों और शरणार्थी शिविरों का चक्कर लगा रहे थे। उन्होंने सिक्खों, हिन्दुओं और मुसलमानों को आपसी बैर की भावना को छोड़कर, अतीत को भुलाकर भाई चारे और शान्ति से रहने पर बल दिया। गाँधी जी के व्यापक प्रभाव को देखते हुए माउंटबेटेन ने उन्हें ''एक अकेली फौज'' कहा।

(ii) **धर्मनिरपेक्षता में दृढ़ आस्था :** उन्होंने दो राष्ट्र-सिद्धान्त का विरोध किया। कांग्रेस ने आश्वासन दिया कि वह अल्पसंख्यकों के नागरिक अधिकारों के किसी भी अतिक्रमण के विरूद्ध हर मुमकिन रक्षा करेंगे।

(iii) **हिन्दू-मुस्लिम एकता :** मुसलमानों ने पूर्ण सहयोग दिया। शौकत अली, मुहम्मद अली, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद तथा डॉ० अन्सारी आदि ने आन्दोलन को सफल बनाने में कार्य किया।

(iv) **नई परिषदों के चुनावों का बहिष्कार :** कांग्रेस ने अपने उम्मीदवारों के नाम वापिस ले लिया। 33 प्रतिशत से भी कम मतदाताओं ने वोट डालें। कुछ स्थानों पर तो मतदान डिब्बों में एक भी वोट नहीं पड़े।

(v) **प्रिंस ऑफ वेल्स का बहिष्कार :** जब राजकुमार नवम्बर, 1921 को भारत आये तो प्रत्येक स्थान पर उनका स्वागत हड़तालों तथा शोक-प्रदर्शनों द्वारा किया गया। 6

अथवा

असहयोग आन्दोलन एक तरह का प्रतिरोध :

कारण :

(i) प्रथम युद्ध के प्रभाव

(ii) रौलट ऐक्ट

(iii) जलियाँवाला बाग की घटना

(iv) खिलाफत आंदोलन 2

कार्यक्रम :

(i) नकारात्मक एवं सकारात्मक आंदोलन की प्रगति : गाँधी द्वारा तथा अन्य नेताओं द्वारा पदवियाँ तथा मैडल त्यागना, सरकारी स्कूलों का बहिष्कार, वकीलों द्वारा अदालतों का बहिष्कार, राष्ट्रीय पंचायतों की स्थापना, विदेशी वस्त्रों की होली, हिन्दू-मुस्लिम एकता इत्यादि।

(ii) आन्दोलन का स्थगित होना।

(iii) चौरा-चौरी की घटना।

(iv) गाँधी की गिरफ्तारी और मुकदमा। 4

खण्ड – ब

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

5. महाजनपदों के विशिष्ट अभिलक्षणों का वर्णन :

(i) प्रत्येक महाजनपद की एक राजधानी होती थी।

(ii) प्रत्येक महाजनपद की राजधानी की सुरक्षा के लिए किलेबन्दी की जाती थी।

(iii) महाजनपदों द्वारा शासक अपनी सुरक्षा के लिए स्थाई सेना का प्रबन्ध करते थे।

(iv) महाजनपदों की आय का प्रमुख स्रोत किसानों से लगान तथा भेट था। 4

6. किताब-उल-हिन्द अल-बेरूनी द्वारा रचित सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसे तहकीक-ए-हिन्द भी कहा जाता है। मौलिक तौर पर ग्रंथ अरबी भाषा में लिखा गया है तथा बाद में यह विश्व की प्रमुख भाषाओं में अनुवादित हुआ। इसमें कुल 80 अध्याय हैं जिनमें भारत के धर्म, दर्शन, समाज, परम्पराओं, रीति-रिवाजों के अतिरिक्त खगोल विज्ञान, चिकित्सा व कानून, न्याय इत्यादि विषयों का विस्तार से वर्णन किया गया है। 4

7. कृष्णदेव राय के शासन की मुख्य विशेषता विस्तार तथा सुदृढ़ीकरण था। 1512 ई० तक उसने तुंगभद्रा और कृष्णा नदियों के बीच के क्षेत्र रायचुर दोआब पर अधिकार कर लिया। फिर उसने उड़ीसा के शासकों का दमन किया। 1520 ई० में उसने बीजापुर के सुल्तान को बुरी तरह पराजित किया। 4

8. जमींदारों की समृद्धि की वजह थी उनकी विस्तृत व्यक्तिगत जमीन। इन्हें मिल्कियत कहते थे, यानी संपत्ति। मिल्कियत जमीन पर जमींदार के निजी इस्तेमाल के लिए खेती होती थी। अक्सर इन जमींनों पर दिहाड़ी के मजदूर या पराधीन मजदूर काम करते थे। जमींदार अपनी मर्जी के मुताबिक इन जमींनों को बेच सकते थे। 4

9. लॉटरी कमेटी के मुख्य कार्य :

कलकत्ता के विकास के लिए लॉटरी कमेटी का गठन 1817 ई० में किया गया। इसका मुख्य कार्य :

(i) लॉटरी बेचकर नगर नियोजन के लिए धन इकट्ठा करना था।

(ii) लार्ड वैलेजली के जाने के बाद कलकत्ता के नगर नियोजन का कार्य इसी कमेटी ने किया।

(iii) कलकत्ता शहर की साफ-सफाई का प्रबन्ध भी यही कमेटी करती थी। 4

खण्ड – स

(अतिलघु उत्तरीय प्रश्न)

10. हड़प्पा सभ्यता में शवों को जलाने के तरीके :

(i) शवों को दबाना

(ii) शवों को जलाना

(iii) शवों को खुले मैदान में छोड़ना 2

11. मेगस्थनीज़ एक यूनानी था जो चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में सैल्यूकस का राजदूत बनकर आया था। वह पाटलीपुत्र में 302 ई० पूर्व से 298 ई० पूर्व तक रहा। उसने भारत के सम्बन्ध में इण्डिका नामक ग्रन्थ लिखा जो उस समय की राजनैतिक दशा, सामाजिक एवं धार्मिक अवस्था की जानकारी देता है। 2

12. बौद्ध धर्म के पतन के कारण थे :

(i) महात्मा बुद्ध की मृत्यु

(ii) बौद्ध धर्म में फूट

(iii) बौद्ध संघों में फूट 2

13. इब्नबतूता मोरक्को का रहने वाला था। वह भारत में 1333 ई० में मुहम्मद तुगलक के काल में आया था। उसने रिहला नामक ग्रन्थ लिखा जिसमें उसने अपनी यात्रा के दौरान प्राप्त अनुभवों के बारे में लिखा। 2

14. बर्नियर ने कृषकों के बारे में लिखा है कि ''हिन्दुस्तान के ग्रामीण जंगलों में काफी भूमि रेतली या बंजर है। यहाँ की खेती अच्छी नहीं है। कृषक जीवन-निर्वहन के साधनों से वंचित कर दिया जाता था। निरंकुशता से हताश होकर किसान गाँव छोड़कर चले जाते थे।2

15. सूफ़ी शब्द सूफ़ से निकला है जिसका अर्थ है ऊन अर्थात् जो लोग ऊनी खुरदरे कपड़े पहनते थे उन्हें सूफ़ी कहा जाता था। कुछ विद्वान सूफी शब्द की उत्पत्ति 'सफा' से मानते हैं जिसका अर्थ साफ होता है। इसी तरह कुछ अन्य विद्वान सूफ़ी को सोफिया अर्थात् शुद्ध आचरण से जोड़ते हैं। 2

16. **मनसबदारी प्रथा :** मुगल नौकरशाही में मनसबदारी प्रमुख थी। यह सैनिक तथा असैनिक दोनों के लिए थी। मनबस का अर्थ था - पद अर्थात् जो भी व्यक्ति मुगलों की सेवा में आता था तो उसे एक मनबस दिया जाता था। मनसब में जात तथा सवार दो शब्दों का प्रयोग होता था। 2

17. अकबर ने सुलह-ए-कुल की नीति अपनाई अर्थात् सभी के साथ सुलह (किसी से मतभेद नहीं) की नीति अपनाई यह अकबर की सभी धर्मों के प्रति सहनशीलता की नीति भी कहा जाता है। इसे बाद के शासकों ने भी अपनाया। औरंगजेब ने इस नीति को बदला था। 2

18. पहाड़िया लोगों द्वारा अपनाई गई झूम खेती क्या थी : पहाड़िया लोग जंगल में झाड़ियों को काटकर व घास-फूस को जलाकर एक छोटा-सा जमीन का टुकड़ा निकाल लेते थे। यह खेत उपजाऊ होता था इसमें वे लोग विभिन्न तरह की दालें व ज्वार बाजरा उगाते और फिर वर्षों के लिए उसे खाली छोड़ देते थे ताकि वह पुनः उर्वर हो जाए। 2

19. असहयोग आन्दोलन के दौरान फरवरी, 1922 में किसानों के एक समूह ने संयुक्त प्रांत के चौरी-चौरा पुरवा में एक पुलिस स्टेशन पर आक्रमण कर उसमें आग लगा दी। इस अग्निकाण्ड में कई पुलिस वालों की जान चली गई। हिंसा की इस कार्यवाही से दुःखी होकर गाँधी जी ने असहयोग आन्दोलन को वापस ले लिया। 2

खण्ड – द

(बहुविकल्पीय प्रश्न)

20. (द) सिन्धुघाटी की सभ्यता 1

21. (अ) महर्षि वेदव्यास 1

22. (ब) सारनाथ में 1

23. (स) हरिहर राय 1

24. (स) गुलबदन बेगम 1

25. (ब) 1813 ई० में 1

26. (द) मद्रास 1

27. (द) पांडिचेरी 1

28. (ब) 1931 ई० 1

29. (स) 1940 ई० में 1

30. (स) कराची 1

31. (द) जुलाई, 1946 ई० में 1

32. (स) डॉ० राजेन्द्र प्रसाद 1

33. (ब) नवम्बर, 1949 ई० में 1

34. (द) 26 जनवरी, 1950 ई० 1

35. (स) 1469 ई० 1

SET – C

खण्ड – अ
(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

1. मोहनजोदड़ो की सड़कें और गलियाँ सीधी होती थीं और एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं। मोहनजोदड़ों में निचले नगर में मुख्य सड़क 10.5 मीटर चौड़ी थी, इसे प्रथम सड़क कहा गया है। अन्य सड़कें 3.6 से 4 मीटर तक चौड़ी थीं। गलियाँ एवं गलियारे 1.2 मीटर (4 फुट) या उससे अधिक चौड़े थे। घरों के बनाने से पहले ही सड़कों व गलियों के लिए स्थान छोड़ दिया जाता था। उल्लेखनीय है कि मोहनजोदड़ों के अपने लम्बे जीवनकाल में इन सड़कों पर अतिक्रमण या निर्माण कार्य दिखाई नहीं देता। 6

अथवा

शिल्प उत्पादन के लिए प्रयुक्त कच्चे माल की जानकारी :

हड़प्पा सभ्यता में चन्हूदड़ों, मोहनजोदड़ों की तुलना में एक बहुत ही छोटी सी बस्ती थी, जो पूर्ण रूप से शिल्प उत्पादन से जुड़ी हुई थी। शिल्प कार्यों में मनके बनाना, शंख की कटाई, धातु कर्म, मुहर निर्माण तथा बाट बनाना शामिल थे।

मनकों के निर्माण में प्रयुक्त पदार्थों में विशेष थे : कार्नीलियन (लाल रंग का) जैसपर, स्फटिक, क्वार्ट्ज तथा खेलखड़ी जैसे - पत्थर, तांबा, कांसा तथा सोने जैसी धातुएँ तथा शंख फयान्स और पक्की मिट्टी सभी का प्रयोग मनके बनाने के लिए होता था।

चन्हूदड़ों के अतिरिक्त नागेश्वर तथा बालाकोट दोनों बस्तियाँ समुद्रतट के समीप स्थित थीं, ये शंख, सेलती हुई बस्तियों जिनमें चूड़ियाँ, करछियाँ तथा पच्चीकारी की वस्तुएँ शामिल हैं के निर्माण के विशेष केन्द्र थे जहाँ से ये माल दूसरी बस्तियों तक ले जाया जाता था।

2. बाबा गुरु नानक देव की मुख्य शिक्षाओं का वर्णन तथा विचारों का संप्रेषण।

बाबा गुरु नानक देव (1469-1539) की शिक्षाएँ उनके भजनों में निहित हैं। इनसे पता चलता है :

(i) उन्होंने निर्गुण भक्ति का प्रचार किया।

(ii) सभी बाहरी आडंबरों को उन्होंने अस्वीकार किया जैसे : यज्ञ, अनुष्ठानिक स्नान, मूर्ति-पूजा व कठोर तप।

(iii) हिन्दू और मुसलमानों के धर्म ग्रन्थों को भी उन्होंने नकारा।

(iv) बाबा नानक के लिये परम पूर्ण रब का कोई लिंग या आकार नहीं था।

(v) रब की उपासना के लिए एक सरल उपाय निरंतर नाम का जाप बताया।

(vi) उन्होंने स्थानीय भाषा पंजाबी भाषा के प्रयोग पर बल दिया और शब्दों का उच्चारण किया। बाबा गुरु नानक यह शब्द अलग-अलग रागों में गाते थे और उनका सेवक मरदाना रवाब बजाकर उनका साथ देता था।

(vii) गुरु नानक देव जी ने अपने अनुयायियों को एक समुदाय में संगठित किया। सामुदायिक उपासना (संगत) के नियम निर्धारित किये, जहाँ सामूहिक रूप से पाठ होता था। 6

अथवा

उदाहरण सहित विश्लेषण कीजिए कि क्यों भक्ति और सूफ़ी चिंतकों ने अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए विभिन्न भाषाओं का प्रयोग किया ?

सूफ़ी और भक्ति प्रचारकों ने अपने विचारों को जनता तक पहुँचाने के लिए स्थानीय भाषाओं का प्रयोग किया ताकि आम लोगों को उनके विचार समझने में आसानी रहे उदाहरणतया :

(i) अलवार तथा नयनार संतों ने अपना प्रचार तमिल भाषा में किया।

(ii) भक्त कबीर के दोहे तथा छंद कई भाषाओं में मिलते हैं इनमें से कुछ संत भाषा में हैं, जो निर्गुण कवियों की विशेष बोली थी।

(iii) सूफ़ी संतों ने भी स्थानीय भाषाओं को अपनाया जैसे कि बाबा फरीद ने पंजाबी भाषा को अपनाया।

(iv) गुरु नानक देव जी ने भी पंजाबी भाषा में अपना प्रचार किया।

3. बहुत सारे स्थानों पर विद्रोही सिपाहियों के नेतृत्व .....

सिपाहियों का विद्रोह धीरे-धीरे जन विद्रोह बन गया। परन्तु नेतृत्व व संगठन के बिना अंग्रेजों से लोहा नहीं लिया जा सकता था। इसलिए उन्होंने नेतृत्व के लिए कई नेताओं से सम्पर्क किया।

(i) सर्वप्रथम मेरठ के सिपाही दिल्ली गए उन्हें बहादुरशाह को अपना नेता बनाया उन्होंने नाममात्र का नेता बनने की ज़िम्मेदारी तभी स्वीकार की जब कुछ सिपाही शिष्टाचार की अवहेलना करते हुए लाल किले के मुगल दरबार में जा घुसे।

(ii) कानपुर में सिपाहियों ने पेशवा बाजीराव II के उत्तराधिकारी नाना साहिब को अपना नेता बनने के लिए विवश किया।

(iii) झांसी की रानी को भी आम जनता के दबाव में विद्रोह का नेतृत्व संभालना पड़ा।

(iv) अवध में नवाब वाजिद अली शाह जैसे लोकप्रिय शासक गद्दी से हटा देने और उसके राज्य पर अधिकार लेने की यादें लोगों के मन में अभी भी ताजा थी। अतः लखनऊ में ब्रिटिश राज के ढहने के समाचार पर लोगों ने नवाब के युवा पुत्र विरंजिस कद्र और राना जीनत महल को अपना नेता चुना। 6

अथवा

विद्रोही क्या चाहते थे ....

बतौर विजेता कठिनाईयों, चुनौतियों और बहादुरी के बारे में अंग्रेजों की अपनी राय थी। वे विद्रोहियों को अहसान फरामोश और बर्बर लोगों का झुंड मानते थे। विद्रोहियों को कुचलने का मतलब यह भी था कि उनकी आवाज को दबा दिया जाए। कुछ विद्रोहियों को ही इस घटनाक्रम के बारे में अपनी बात दर्ज करने का मौका मिला। यूं भी विद्रोहियों में ज्यादातर सिपाही आम लोग थे जो पढ़े-लिखे नहीं थे। इस प्रकार अपने विचारों का प्रसार करने और लोगों को

विद्रोह में शामिल करने के लिए जारी की गई कुछ घोषणाओं व ईश्तहारों के सिवाय हमारे पास ऐसी ज्यादा चीजें नहीं हैं जिनके आधार पर हम विद्रोहियों के नजरिए को समझ सकें :

(i) **एकता की कल्पना :** 1857 में विद्रोहियों द्वारा जारी की गई घोषणाओं में जाति और धर्म का भेद किए बिना समाज के सभी तबकों का अह्वान किया जाता था। सभी हिन्दू-मुसलमानों की धार्मिक भावनाओं का ख्याल रखा जाता था। बहादुरशाह के नाम से जारी की गई घोषणा में मुहम्मद और महावीर दोनों की दुहाई-देते हुए जनता से इस लड़ाई में शामिल होने का आह्वान किया गया।

(ii) उत्पीड़न के प्रतीकों के खिलाफ इन घोषणाओं में ब्रिटिश राज से संबंधित हर चीज को पूरी तरह खारिज किया जा रहा था। देशी रियासतों पर कब्जे और समझौतों का उल्लंघन करने के लिए अंग्रेजों की निन्दा की जाती थी। विद्रोही नेताओं का कहना था कि अंग्रेजों पर भरोसा नहीं किया जा सकता।

लोगों का इस बात पर गुस्सा था कि ब्रिटिश भू-राजस्व व्यवस्था ने बड़े-छोटे भू-स्वामियों को जमीन से

बेदखल कर दिया था और विदेशी व्यापार ने दस्तकारों और बुनकरों को तबाह कर डाला था। ब्रिटिश शासन के हर पहलू पर निशाना साधा जाता था। फिरंगियों पर स्थापित और सुंदर जीवन-शैली को नष्ट करने का आरोप लगाया जाता था। विद्रोही अपनी उस दुनिया को दोबारा बहाल करना चाहते थे।

विद्रोही उद्घोषणाएँ इस व्यापक डर को व्यक्त करती थीं कि अंग्रेज, हिन्दुओं और मुसलमानों की जाति और धर्म को नष्ट करने पर तुले हैं और वे लोगों को ईसाई बनाना चाहते हैं। इसी डर की वजह से लोग चल रही अफवाहों पर भरोसा करने लगे। लोगों को प्रेरित किया गया कि वे इकट्ठे मिलकर अपने रोजगार, धर्म, इज्जत और अस्मिता के लिए लड़ें। यह व्यापक सार्वजनिक भलाई की लड़ाई होगी।

विद्रोहियों ने जानबूझकर उनके विरूद्ध हमले किए जिन्होंने अंग्रेजों की मदद की। गाँवों में उन्होंने सूदखोरों के बही खाते जला दिए और उनके घर तोड़-फोड़ डाले। इससे पता चलता है वे समाज में ऊँच-नीच को खत्म करना चाहते थे। इसमें हमें एक वैकल्पिक दृष्टि, संभवतः एक ज्यादा

समतापरक समाज की कल्पना दिखाई देती है। पर यह सोच उनकी घोषणाओं में नहीं दिखाई देती। उनमें तो फिरंगी राज के खिलाफ तमाम सामाजिक समूहों को एकजुट करने का ही आह्वान किया जाता था।

वैकल्पिक सत्ता की तलाश :

ब्रिटिश शासन ध्वस्त हो जाने के बाद दिल्ली, लखनऊ और कानपुर जैसे स्थानों पर विद्रोहियों ने एक प्रकार की सत्ता और शासन संरचना स्थापित करने का प्रयास किया। बेशक यह प्रयोग ज्यादा समय तक नहीं चला। लेकिन इन कोशिशों से पता चलता है कि विद्रोही नेता अठारहवीं सदी की पूर्व - ब्रिटिश दुनिया को पुनःस्थापित करना चाहते थे। इन नेताओं ने पुरानी दरबारी संस्कृति का सहारा लिया। विभिन्न पदों पर नियुक्तियाँ की गई। भू-राजस्व वसूली और सैनिकों के वेतन के भुगतान का इंतजाम किया गया। लूटपाट बंद करने के लिए हुक्मनामें जारी किए गए। इसके साथ-साथ अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध जारी रखने की योजनाएँ भी बनाई गई। सेना की कमान शृंखला तय की गई। इन सारे प्रयासों में विद्रोही 18वीं सदी के मुगल जगत से ही

प्रेरणा ले रहे थे - यह जगत उन तमाम चीजों का प्रतीक बन गया जो उनसे छिन चुकी थी। परन्तु यह सारे प्रयास अन्त में असफल सिद्ध हुए और अंग्रेजों ने इनका दमन कर दिया।

4. See **Set – B** 4th Answer. 6

अथवा

सविनय अवज्ञा आन्दोलन की प्रगति :

(i) बम्बई, बंगाल, मद्रास, मध्य प्रदेश, संयुक्त प्रांत आदि में लोगों ने नमक स्वयं बनाया और उससे नमक कानून भंग हुआ।

(ii) घरासाना में हजारों लोगों ने नमक के गोदामों पर आक्रमण किया और पुलिस अत्याचारों से कुछ व्यक्ति मरे और कई घायल हुए।

(iii) कई स्थानों पर कर्मचारियों ने सरकारी नौकरियों से त्यागपत्र दिया और विधानमण्डलों की सदस्यता त्याग दी।

(iv) विदेशी वस्त्रों को जलाया गया तथा शराब की दुकानों पर धरने दिए गए।

(v) अधिकांश मुसलमानों ने इस आन्दोलन में सरकार का साथ दिया।

(vi) श्रीमती सरोजनी नायडू और खान अब्दुल गफ्फार खान ने इस आन्दोलन में सराहनीय कार्य किया।

खण्ड – ब

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

5. दक्षिण भारत में पाण्ड्य राजाओं की राजधानी मथुरा में तमिल कवियों के सम्मेलन हुए। इन सम्मेलनों को संगम के नाम से जाना जाता है। ये तीन सम्मेलन (संगम) लगभग 300 ई० पूर्व से 300 ई० के बीच बुलाए गए। इन संगमों को पाण्ड्य शासकों का संरक्षण प्राप्त था। इन संगमों के कारण संगम साहित्य की रचना हुई। वर्तमान में संगम साहित्य में उपलब्ध ग्रन्थों के नाम हैं पत्थुप्यातु, एतुत्थाकई, चिल्पादिकारम् मणिमेखलय जीवक चिन्तामणि आदि। 4

6. सती प्रथा के बारे में बर्नियर ने लिखा है :

(i) यह एक क्रूर प्रथा थी जिसमें एक विधवा को अग्नि की भेंट चढ़ा दिया जाता था।

(ii) विधवा को सती होने के लिए विवश किया जाता था।

(iii) बाल-विधवाओं के प्रति लोगों के मन में सहानुभूति नहीं थी।

(iv) इस प्रक्रिया में ब्राह्मण तथा घर की बड़ी महिलाएँ हिस्सा लेती थीं। 4

7. विजयनगर में जल प्रबन्धन एक चुनौती थी क्योंकि पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण पानी की दिक्कत रहती थी। यहाँ के शासकों ने सभी धाराओं के साथ-साथ बांध बनाकर कई आकार के हौज बनाए। पानी को इकट्ठा करने और इसे शहर तक ले जाने के लिए व्यापक प्रबन्ध किया गया था। यहाँ का सबसे प्रसिद्ध हौज कमलपूरम था जो 15वीं शताब्दी में बना था इस हौज के पानी से न केवल आस-पास के खेतों को सींचा जाता था बल्कि इसे एक नहर द्वारा राजकीय केन्द्र तक भी ले जाया जाता था। 4

8. कृषि के लिए कौन-से सिंचाई साधन .....

(i) **रहट :** यह लकड़ी के पहियों वाला भी था तथा रस्सी पर बाल्टी पर बंधा हुआ भी होता था। बाबर ने भी अपनी आत्मकथा - बाबरनामा में भारत में सिंचाई प्रणाली व रहट के प्रयोग के बारे में जानकारी दी है।

(ii) **जलाशयों से सिंचाई :** कृषक कुछ स्थानों पर प्राकृतिक जलाशयों के साथ-साथ कृत्रिम जलाशय भी खोद लेते थे। इन जलाशयों में वर्षा का पानी एकत्रित हो जाता था जो एक सीमित क्षेत्र की सिंचाई करता था।

(iii) **नहरों से सिंचाई :** शाहजहाँ ने पंजाब में शाह नहर, तो फिरोजशाह द्वारा जिस नहर का निर्माण करवाकर हिसार पानी लाया गया था उसकी अकबर व शाहजहाँ के काल में फिर से खुदाई करवायी गयी। 4

9. औपनिवेशिक शहरों के रिकार्ड्स संभाल कर क्यों रखे जाते थे :

(i) जनसंख्या की वृद्धि की दर का पता लगाने के लिए।

(ii) शहरों की गतिविधियों/अर्थात् व्यापारिक लेनदेन में क्या उतार चढ़ाव आ रहे हैं।

(iii) सामाजिक जीवन कैसे बदल रहा है।

(iv) शहरों में जीवन की गति और दिशा को कैसे नियंत्रित किया जाए। 4

खण्ड – स

(अतिलघु उत्तरीय प्रश्न)

10. सिन्धु घाटी की सभ्यता के माप-तौल की विधि एक सूक्ष्म एवं परिशुद्ध प्रणाली थी। ये बाट सामान्यतः पत्थर से बने होते थे। ये प्रायः घनाकार (Cubic) होते थे और किसी भी तरह के निशान से रहित होते थे। इन बाटों के निचले मानदंड (1, 2, 4, 8, 16, 32 इत्यादि 12,800 तक) थे, जबकि ऊपरी मानदंड दशमलव प्रणाली के अनुसार थे। धातु से बने तराजू के पलड़े भी मिले हैं। 2

11. **आईन-ए-अकबरी का महत्त्व :** अबुलफजल अकबर का दरबारी कवि था। अकबर ने अपने शासनकाल की घटनाएँ लिखने के लिए अबुल फजल को यह कार्य सौंपा। अतः उसने अकबरनामा को लिखा। जो अकबर के काल की सभी घटनाओं की जानकारी देता है। इसके तीन खण्ड हैं और तीसरा खण्ड आईन-ए-अकबरी है। 2

12. जैनधर्म का विभाजन दिगम्बर और श्वेताम्बर नामक दो उप-सम्प्रदाओं में हुआ था। 2

13. इब्नबतूता दिल्ली को देहली कहता था। उसके अनुसार ''देहली बड़े क्षेत्र में फैला घनी आबादी वाला शहर है। शहर के चारों ओर बनी प्राचीर अतुलनीय दीवार की चौड़ाई ग्यारह हाथ है। प्राचीर के अन्दर खाद्य सामग्री, हथियार, बारूद, मशीनों के संग्रह के लिए भण्डार गृह बने हुए थे। 2

14. इस्लाम धर्म की दो मुख्य शिक्षाएँ :

(i) अल्लाह एक मात्र ईश्वर है।

(ii) पैगम्बर मोहम्मद उनके दूत अर्थात् शाहद हैं। 2

15. (i) माहलवाड़ी के अन्तर्गत महाल या गाँव को एक इकाई माना जाता था।

(ii) भू-राजस्व देने के लिए यह इकाई उत्तरदायी थी।

(iii) यह मुख्यतः संयुक्त प्रांत, आगरा, अवध, पंजाब तथा मध्य प्रांत में लागू की गई थी। 2

16. आईने-ए-अकबरी को अबुल फजल ने लिखा था। अकबर ने उसे अपने शासन काल की सभी घटनाओं को लिखने का कार्य दिया था। आईन-ए-अकबरी के लेखन का उद्देश्य अकबर के शाही कानूनों को सारांश में लिखना था। 2

17. मुगल प्रांतों के शासन की सुगमता के लिए साम्राज्य को कई प्रांतों में बाँटा गया था। सूबे का मुखिया सूबेदार होता था। सूबे आगे सरकारों में बँटे थे जिसके मुखिया फौजदार होते थे। सरकार को आगे परगनों अर्थात् जिलों में बाँटा गया था सबसे छोटी इकाई गाँव होती थी जिसकी व्यवस्था पंचायतें करती थीं। 2

18. कस्बों में लोग शिल्पकारी, प्रशासन व व्यापार का कार्य करते थे, जबकि देहात में खेती लोगों का प्रमुख व्यवसाय था। कस्बों की प्रायः किलेबंदी की जाती थी, जबकि देहात की नहीं। 2

19. गांधी-इर्विन पैक्ट नमक सत्याग्रह के पश्चात् 1931 ई० में हुआ था इस समझौते के अनुसार सरकार ने सभी गैर हिंसात्मक राजनैतिक कैदियों को छोड़ दिया। आन्दोलन में जब्त की गई सम्पत्ति लौटाएगी समुद्र तट पर लोगों को नमक बनाने की आज्ञा दे दी गई। गांधी ने इसके बदले सविनय अवज्ञा आन्दोलन स्थगित कर दिया और दूसरे गोलमेज़ में भाग लेने की बात मान ली। 2

खण्ड – द

(बहुविकल्पीय प्रश्न)

20. (अ) मातृदेवी की 1

21. (स) पांडवों ने 1

22. (स) बौद्ध 1

23. (द) कृष्णदेव राय 1

24. (द) नादिरा 1

25. (द) लार्ड कार्नवालिस 1

26. (ब) कुदाल 1

27. (ब) गोवा 1

28. (अ) फरवरी, 1922 ई० 1

29. (द) मुहम्मद इकबाल 1

30. (ब) रैम्से मैकडोनाल्ड 1

31. (द) 1946 ई० 1

32. (अ) पंडित जवाहर लाल नेहरू 1

33. (द) 1935 ई० 1

34. (द) हिन्दी 1

35. (ब) निज़ामुद्दीन औलिया 1

SET – D

खण्ड – अ

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

1. समाज के शासकों द्वारा .....

सत्ता के केन्द्र अथवा सत्ताधारी लोगों के नारे में पुरातात्विक विवरण से हमें कोई स्पष्ट उत्तर नहीं मिलता। पुरातत्त्वविदों ने मोहनजोदड़ों में मिले एक विशाल भवन को एक प्रासाद की संज्ञा दी परन्तु इससे संबद्ध कोई अन्य वस्तुएँ नहीं मिली हैं एक पत्थर की मूर्ति को 'पुरोहित-राजा' की संज्ञा दी गई थी और यह नाम आज भी प्रचलित है। ऐसा इसलिए है क्योंकि पुरातत्त्वविद् मेसोपोटामिया के

इतिहास तथा वहाँ के पुरोहित राजाओं से परिचित थे और यही समानताएँ उन्होंने सिंधु क्षेत्र में भी ढूँढी। हड़प्पा सभ्यता की आनुष्ठानिक प्रथाएँ अभी तक ठीक प्रकार से समझी नहीं जा सकीं हैं और न ही यह जानने के साधन उपलब्ध हैं कि क्या जो लोग इन अनुष्ठानों का निष्पादन करते थे, उन्हीं के पास राजनैतिक सत्ता होती थी।

कुछ पुरातत्त्वविद् इस मत में विश्वास करते हैं कि हड़प्पाई समाज में शासक होते ही नहीं थे तथा सभी सामाजिक स्थिति समान थी। दूसरी ओर कुछ पुरातत्त्वविद् यह मानते हैं कि यहाँ कोई एक शासक नहीं बल्कि कई शासक थे जैसे मोहनजोदड़ो, हड़प्पा आदि के अपने अलग-अलग राजा होते थे। कुछ अन्य यह तर्क देते हैं कि यह एक ही राज्य था जैसा कि पुरावस्तुओं में समानताओं, नियोजित बस्तियों के साक्ष्यों, ईंटों के आकार में निश्चित अनुपात, तथा बस्तियों के कच्चे माल के स्रोतों के समीप संस्थापित होने से स्पष्ट हैं। अभी तक की स्थिति में अन्तिम परिकल्पना सबसे युक्तिसंगत प्रतीत होती है क्योंकि यह कदाचित संभव नहीं लगता कि पूरे के पूरे समुदायों द्वारा इकट्ठे जटिल निर्णय लिए तथा कार्यान्वित किए जाते होंगे। 6

अथवा

हड़प्पा सभ्यता के पतन के कारण :

(i) बाढ़ें और भूकम्प

(ii) सिन्धु नदी का मार्ग बदलना

(iii) क्षेत्र में बढ़ती शुष्कता और घग्घर नदी का सूख जाना

(iv) आर्यों का आक्रमण

(v) महामारी और अकाल 6

2. See of **Set – A** 2nd's ***or*** Answer 6

अथवा

See **Set – B** 2nd's ***or*** Answer 6

3. 1857 के घटनाक्रम के लिए धार्मिक विश्वास :

(i) भारतवासियों को ईसाई बनाना

(ii) अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार

(iii) विलियम बैंटिक के सामाजिक सुधार

(iv) हिन्दू ग्रन्थों की निंदा करना

(v) 1856 ई० में General Service Enlistment Act पास करना

(vi) चर्बी वाले कारतूसों का प्रयोग 6

अथवा

See **Set – B** 3rd's ***or*** Answer

4. गांधी जी के आखिरी बहादुराना दिन भारत की आजादी के लिए 1945-47 ई० के मध्य तेजी से वार्ताओं का दौर चल रहा था। इसी समय 1946 के चुनावों में उग्र साम्प्रदायिकता ने अपना रंग भी दिखाया अब लीग ने अलग राष्ट्र की माँग की सीधी कार्यवाही तक से प्राप्त करना तय कर दिया तो देश के अनेक भागों में दंगे भड़क उठे। वार्तायें असफल सिद्ध हो रही थीं। अन्ततः कांग्रेस ने विभाजन को स्वीकार कर लिया बँटवारे के साथ ही पंजाब व बंगाल के बँटवारे के कारण अनेक भागों में साम्प्रदायिक हिंसा भड़क उठी।

गांधी जी इन सत्ता की वार्ताओं से दूर रहे उन्होंने आखीर तक विभाजन का विरोध किया। उन्होंने यहाँ तक सुझाव दिया कि विभाजन को टालने के लिए जिन्ना को प्रधानमंत्री बनाने का सुझाव दिया तो कांग्रेसियों ने इसका विरोध किया तो दंगे और भड़क गए तो गांधी जी एक बार पुनः उठ खड़े हुए और दंगों को शान्त करने में लग गए। गांधी जी जहाँ भी गए वहाँ पर बिजली का सा असर हुआ विभाजन होने के बावजूद उग्र साम्प्रदायिक दंगों व मारकाट के दौर में भी गांधी जी ने आशा जताई कि भारत दो भागों में बँट चुका है लेकिन हृदय से हम सभी सदैव मित्र एवं भाई रहेंगे, एक दूसरे को मदद और सम्मान देते रहेंगे और विश्व के लिए हम एक ही होंगे अतः साम्प्रदायिक दंगों को रोकने, अकेले ही भीड़ में पहुँचकर भाई-चारे का संदेश देने के कारण सुमित सरकार ने गांधी जी को इस काल का महात्मा गांधी का श्रेष्ठतम काल कहा है। 6

अथवा

भारत छोड़ो आन्दोलन के कारण :

(i) भारत पर जापान का खतरा बराबर बना हुआ था। इसलिए गांधी जी ने कहा कि अंग्रेजों को चाहिए कि वे भारत को जापान के लिए यदि नहीं तो भारतीयों के लिए छोड़ दें।

(ii) कैबिनेट मिशन की असफलता से निराशा का वातावरण, इसलिए जवाहर लाल नेहरू के अनुसार, ''जनता की निकट निराशा को साहस और प्रतिरोध की भावना में बदलना आवश्यक था।

(iii) गांधी जी ने समझ लिया था कि स्वतंत्रता के लिए विद्रोह आवश्यक है उनके विचार ''करो या मरो'' (Do or Die) में परिवर्तित हो गए थे।

(iv) सुभाष चन्द्र बोस के जोशीले भाषण।

(v) भारतीय कांग्रेस कमेटी का अधिवेशन बम्बई में हुआ जिसमें 8 अगस्त को ''भारत छोड़ो प्रस्ताव'' पास कर दिया गया।

(vi) द्वितीय विश्व युद्ध से अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो गईं जिसके लिए जनता ने अंग्रेजी शासन को जिम्मेदार माना और उसका ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध आक्रोश बढ़ता गया।

खण्ड – ब

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

5. मौर्य प्रशासन की मुख्य विशेषताएँ :

(i) राजा और उसकी शक्तियाँ

(ii) मन्त्रिपरिषद्

(iii) धर्ममहामात्र

(iv) प्रांतीय प्रशासन - पाँच प्रांत

(v) स्थानीय प्रशासन

(a) नगरों का प्रबन्ध

(b) गाँवों का प्रबन्ध

(vi) सैनिक प्रबन्ध 4

6. इब्नबतूता भारत में 1334 ई० में दिल्ली पहुँचा, वह नए देशों और लोगों के बारे में जानना चाहता था। उसने एक रिहला नामक ग्रन्थ लिखा। इसमें उसने अपनी यात्रा के दौरान प्राप्त अनुभवों का सुंदर चित्रण किया है। इससे हमें सामाजिक मूल्यों और नई संस्कृति के विभिन्न पक्षों का पता चलता है। इब्नबतूता ने पान और नारियल को विचित्र पाया। इसलिए इनका विशेष वर्णन किया। इब्नबतूता मोरक्को का रहने वाला था। उसने भारत के नगरों तथा कुशल डाक प्रणाली के बारे में भी लिखा। इब्नबतूता के अनुसार भारतीय कृषि अत्यधिक उत्पादक थी। 4

7. विजयनगर के सामान्य लोगों से अभिप्राय उन लोगों से है जो सत्ता में भागीदारी नहीं करते थे। इनमें धनी व्यापारी भी शामिल थे। उनके जीवन की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित थीं :

(i) यहाँ पर कुछ धनी व्यापारी भी रहते थे जो मुस्लिम थे। यहाँ पर स्थित मकबरे और मस्जिदों के विशिष्ट नमूने हैं फिर भी उनकी स्थापत्य कला हंपी से मिले मंदिरों की स्थापत्य से मिलती-जुलती है।

(ii) 16वीं शताब्दी का पुर्तगाली यात्री बारबोसा लिखता है कि लोगों के अन्य आवास छप्पर के हैं, परन्तु मजबूत हैं, और व्यवसाय के आधार पर कई लंबी गलियों में व्यवस्थित हैं। इनके बीच कई खुले स्थान भी हैं। 4

8. जंगलवासियों के जीवन में बदलाव के किन्हीं दो कारणों का वर्णन :

मुगलकाल में जंगलवासियों के जीवन में बदलाव में ***दो*** कारण इस प्रकार हैं :

(i) व्यापार के कारण जंगलों की सफाई की गई तथा शहद, दूध व लाख की खरीद - बेंच ने उनकी परम्परागत जीवन शैली को बदला।

(ii) राज्यों की विस्तारवादी नीति व हाथियों की आवश्यकता ने जंगलवासियों को प्रभावित किया। राज्य ने उन्हें संरक्षण दिया और उन्होंने राज्य को हाथी दिए। 4

9. मद्रास को बहुत से गाँवों को मिलाकर विकसित किया गया था। धीरे-धीरे भिन्न-भिन्न प्रकार के लोग और समुदाय मद्रास में आकर बसने लगे। यूरोपवासी White Town में रहने लगे जिनका केन्द्र Fort Saint George था जबकि गरीब और भारतीय लोग Black Town में रहते थे। अंग्रेजों की सत्ता मजबूत होने पर अंग्रेजों ने अपने बड़े मकान पहले माउंट रोड और पूनामाली रोड पर बनाये। यह सड़कें किले से छावनी तक जाती थीं। इसी दौरान सम्पन्न भारतीय अंग्रेजों की तरह रहने लगे परिणामस्वरूप मद्रास के इर्द-गिर्द स्थित गाँवों का स्थान बहुत-से नए उपशहरी प्रदेशों ने ले लिया। 4

खण्ड – स

(अतिलघु उत्तरीय प्रश्न)

10. मोहनजोदड़ों का अर्थ है मृतकों का टीला। सिंधी भाषा में इसे मोया-दा-दड़ा कहते हैं। इसकी खोज 1922 ई० में राखलदास बनर्जी ने की थी। 2

11. प्रयाग प्रशस्ति हरिषेण द्वारा लिखा गया था, जो समुद्रगुप्त से संबंध रखता है, अभिलेख की 33 लाइनें हैं जो संस्कृत में लिखे भाव में हैं। इससे हमें समुद्रगुप्त के जीवन और उसकी सफलताओं की जानकारी मिलती है। 2

12. परिवार व्यवस्था की ***दो*** विशेषताएँ :

(i) परिवार में वैवाहिक या रक्त-सम्बन्धों का होना।

(ii) परिवार के सदस्य प्रायः परम्परा और रीति-रिवाजों में बंधे होते हैं। 2

13. बौद्ध धर्म के पतन के कारण :

(i) बौद्ध धर्म में आडम्बर व दुर्बलताएँ उत्पन्न हुईं।

(ii) महात्मा बुद्ध की मृत्यु।

(iii) बौद्ध धर्म में विभाजन-महायान-हीनयान। 2

14. बर्नियर नए शहरी केन्द्रों को शिविर नगर कहता है। जिससे उसका आशय उन नगरों से है जो अपने अस्तित्व के लिए राजकीय शिविर पर निर्भर थे। उसका विश्वास था कि ये नगर राज दरबार के आगमन के साथ अस्तित्व में आते थे और उसके चले जाने के बाद तेजी से विलुप्त हो जाते थे। 2

15. गरीब नवाज, अजमेर में ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह है जिन्हें लोग गरीब नवाज भी कहते हैं चिश्ती अपने आचरण, धर्मनिष्ठा के कारण विख्यात हुए मुहम्मद बिन तुगलक पहला सुल्तान था जिसने इस दरगाह की यात्रा की। 2

16. उत्पादन की प्रक्रिया में मर्द और महिलाएँ खास किस्म की भूमिकाएँ अदा करते थे। मुगलकाल में महिलाएँ पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खेतों में काम करती थीं। मर्द खेत जोतते व हल चलाते थे और महिलाएँ बुआई, निराई और कटाई के साथ-साथ पकी हुई फसल का दाना निकालने का काम करती थीं। सूत कातने, बर्तन बनाने के लिए मिट्टी को साफ करने और गूँधने और कपड़ों पर कढ़ाई जैसे दस्तकारी के काम उत्पादन के ऐसे पहलू थे जो महिलाओं के श्रम पर निर्भर थे। 2

17. अकबर ने सभी धर्मों की अच्छी बातों को मिलाकर एक धर्म बनाया जिसे 1582 ई० में दीन-ए-इलाही का नाम दिया गया। अकबर ने इसे अपनाने पर किसी को बाध्य नहीं किया। 2

18. दामिन-ई-कोह नाम उस विस्तृत भू-भाग को दिया गया था जो संथालों को दिया गया था। सन् 1832 तक इस पूरे क्षेत्र का

सर्वेक्षण करके नक्शा बनाया गया। इसके चारों ओर खंबे गाड़कर इसकी परिसीमा का निर्धारण किया गया। इस परिसीमित क्षेत्र को संथाल भूमि घोषित किया गया। 2

19. सत्याग्रह शब्द का अर्थ है सत्य के लिए अड़ जाना, झूठ का विरोध करना, अत्याचार और शोषण के विरोध के लिए अनशन और धरना देना इत्यादि। 2

खण्ड – द

(बहुविकल्पीय प्रश्न)

20. (द) खेतड़ी (राजस्थान) से 1

21. (ब) कुरुक्षेत्र 1

22. (स) वर्धमान महावीर स्वामी 1

23. (द) अरविदु वंश 1

24. (द) औरंगजेब 1

25. (अ) किसान 1

26. (स) 1861 से 1

27. (ब) मद्रास 1

28. (स) गोपाल कृष्ण गोखले 1

29. (ब) ढाका 1

30. (द) मुस्लिम लीग 1

31. (स) तीन 1

32. (द) हिन्दुस्तानी 1

33. (द) 165 दिन 1

34. (ब) 3 1

35. (ब) कबीरदास 1